ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः

चर्चस्तव

श्री धर्माचार्य कृत

पंचस्तवी

का

दूसरास्तव

काश्मीरी रूपांतरकार :

प्रो० ओंकारनाथ चूंगू

मिलने का पता :-

भगवान गोपी नाथ आश्रम, बोड़ी उदयवाला, जम्मू ।

पम्पोश एन्क्लेव, नई दिल्ली - 48

जून, 1997 मूल्य : 5/- रुपये

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रस्तावना

चर्चस्तव:

पंचस्तवी के प्रथम स्तव में भगवती त्रिपुर सुन्दरी की स्तुति लघु उपाय अर्थात छोटे साधारण उपाय के आधार से की गई है। इस कारण इस स्तव का नाम लघुस्तव रखा गया है। इस स्तव में भगवती पराशक्ति की क्रिया शक्ति प्रत्यक्षरूप में सर्वगोचर है। प्रो० ओंकार नाभ चूंगू ने इन सस्कृत भाषा में रचे मूल श्लोकों के सूक्ष्म अर्थ सरल काश्मीरी पद्य में रूपान्तरित किए। पिछले वर्ष जून मास में लघुस्तव के मूल श्लोकों को काश्मीरी पद्य सहित पुस्तकाकार में छपवा कर भक्त-जनों के सामने रखा, जिन्होंने इस कार्य की सराहना की। अब यह दूसरा स्तव (चर्चस्तव) छपने जा रहा है।

पंचस्तवी के दूसरे स्तव का नाम चर्चस्तव है। चर्चा का अर्थ है अन्वेषण अर्थात खोजना या पूछना। अत: इस स्तव में परा भगवती की स्तुति: ज्ञानशक्ति की प्रधानता में की गई है। इन अर्थों को बुद्धिबल से समझने की आवश्यकता है। नहीं तो देखने में सरल पर छल-पूर्वक की गई यह स्तुति समझ में नहीं आ सकती है। कई श्लोकों में स्त्री-शरीर के भौतिक सौन्दर्य का वर्णन मिलता

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

है। साधारण अर्थ में तो वह केवल विषयापेक्षी ही जान पड़ता है, परन्तु इन श्लोकों के रहस्य - अर्थ को समझना आवश्यक है और अनिवार्य भी। अतः यह जानना आवश्यक होगा कि जगत - माता के साकार विग्रह का प्रत्येक अङ्ग परा भगवती की विविध शक्तियों के ही प्रतिनिधि हैं। तभी परमार्थलाभ मिल सकता है। बुद्धिमान साधक को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

प्रो० चरंगू ने इन अर्थों को बड़ी सावधानी से सँवारा है। इस कार्य में उन को मेरी सहायता सुलभ रही।

जम्मू
जून 1, 1997

जानकीनाथ कौल 'कमल'

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दो शब्द

प्राचीन काल से काश्मीर एक प्रसिद्ध शक्ति पीठ रहा है। शंकराचार्य, अभिनवगुप्त आदि आचार्यों तथा साधु सन्तों और साधकों की मान्यता के अनुसार काश्मीर भूमि शक्ति पीठों में से एक केन्द्र रहा है। पीठाधीश्वरी को परा-शक्ति कहते हैं उसी परा-शक्ति की चर्चा, स्तुति ध्यान पंचस्तवी का मूल तत्व है।

पंचस्तवी का गाण पूर्वक पाठ तथा श्लोकों का अर्थविश्लेषण काश्मीर मंडल में कई शताब्दियों से काश्मीरी पण्डित जाति में चलता आ रहा है।

कुण्डलिनी योग पंचस्तवी का सार तत्व है। भावना तथा साधना इस का आधार है। श्रीचक्र द्वारा उपासना का पंचस्तवी में कहीं-कहीं पर विमर्शमय संकेत मिलता है।

इस के रचना काल तथा रचनाकार के सम्बन्ध में अभी तक यही सिद्ध है कि श्रीधर्माचार्य द्वारा लगभग आठवीं शताब्दी के आस-पास इस की रचना हुई है। 1994 ई० में श्री जानकी नाथ कौल 'कमल' द्वारा व्यसतार

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

से लिखी पंचस्तवी की अंग्रेजी भाषा टीका रामकृष्ण आश्रम श्रीनगर से प्रकाशित हुई है जिस के अध्ययन से बहुत सी शंकाओ का समाधान हो जाता है ।

पंचस्तवी का अध्ययन करने से यह सपष्ट हो जाता है कि श्री धर्माचार्य काश्मीर के ही महान आचार्य रहे होंगे । इस बात को तांटक (डेजिहोर) आर्भट्टी (केशों को चमकते रिबन से बान्धा हुआ 'तरग लाट'), प्रद्युम्न पीठ (शारिका का पीठ चक्रीश्वर) तथा उदयन प्रवर (राजा प्रवर सैन) आदि प्रयोग, यह मानने पर वाध्य करते हैं कि इस विशुद्ध योग ग्रंथ के रचयिता काश्मीर से ही सम्बन्ध रखते हैं ।

एक और प्रमाण कि काश्मीर मंडल में शक्ति पीठ और तत्सम्बन्धी मन्दिर प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं । जैसे शारदा, त्रिपुर - सुन्दरी अस्थापन, राज्ञा - पीठ, क्षोर-भवानी (तुलमुल, रायथन, ल'कुटिपुर, लुकभवन, दिवसर, खन्नभरणी, मंजगाम) शारिका पीठ (हारी पर्वत, पोखरीबल), ज्वाला (खिव), भर्गशाखा (मटन), इत्यादी । इन स्थानों पर कई शताब्दियों से पंचस्तवी के रसोले श्लोकों से पूजा आराधना होती रही है। वैसे तो पंचस्तवी का पाठ दक्षिण भारत के शक्ति पीठों के अतिरिक्त कहीं ओर नहीं देखने को मिलता है ।

पंचस्तवी को पूजा विधि में लाना काश्मीरी

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पण्डितों की ही परम्परा रही है। इन प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाता है कि पंचस्तवी काश्मीर की ही देन है। अन्ततः यही मानना पडेगा कि यह ग्रंथ शैव - शाक्त साधकों का काश्मीर मण्डल में साधना - आधार, सर्वप्रिय और इष्ट रहा है।

पंचस्तवी के कई अनुवाद और टीकायें लिखी गई हैं जिन के लेखक प्रायः काश्मीर के ही सपुत्र रहे हैं।

मातृ भाषा हर एक को मधुर तथा रमणीय लगती है। इसी कारण मैं ने कई भक्तों के अनुरोध पर काश्मीरी भाषा में स्पष्ट पद्य अनुवाद प्रस्तुत करने की चेष्ठा की है। यह कार्य भगवान गोपीनाथ जी महाराज के अपार अनुग्रह से ही सम्भव हुआ है।

पंचस्तवी के इस दूसरे 'चर्चस्तव' को संवारने तथा स्पष्ट अर्थ प्रकट करने में मेरे प्रिय आदरणीय जानकीनाथ कौल 'कमल' जी ने अपने बहुमुल्य समय से अवसर निकाल कर मेरा मार्ग दर्शन किया जिस से भक्तजनों को यह पंचस्तवी का मधुर काश्मीरी भाषा में अनुवाद मिलना प्राप्त हो सका है। मैं कमल जी का आभारी हूं और उन्हें प्रणाम करता हूं।

यह पुस्तिका धर्म हेतू आप तक पहुंचाने में श्री प्राण नाथ कौल, 'सचिव भगवान गोपी नाथ जी आश्रम'

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तथा मित्र गण सर्वश्री सोहन लाल खुर्दी, तेज कृष्ण रैणा चमन लाल दुरानी और अशोक जी खशु ने जो सहयोग दिया है तथा अशोक जी रैणा की आवाज़ में वीर हऊस सरवाल स्ट्यूडियो से केसेट भरवा कर पेश किया है, मैं इन सब का आभारी हूं।

ओंकारनाथ चूंगू

59 - ए - पटोली,
जम्मू तवी।
जून, 1, 1997

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ॐ त्रिपुर सुन्दर्यै नमः

ध्यान

तुलमुलि रा'ग्यन्यायि परबत' शारिकायि,
खिवि जालायि बालायि कर' प्रणाम।

ही त्रुपोर' सुन्दरी यिम छि चा'निय स्वरूप,
छुस ब लोलसान पाद - वन्दना करान।

तिहन्जि पाद' गदि सूत्य ज्यथ मन त' वा'णी,
यस फो'लान तस छु न पर' केंह प्यवान।

अस्य तवय गुल्य गण्डिथ छिय प्यवान चे'य परण,
गछ प्रसन्न अ'सि कर अज्ञान दूर।

माता - गछ प्रसन्न, अ'सि कर अज्ञान दूर॥

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आनन्द सुन्दरपुरन्दर मुक्त माल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ।१।

यन्दराज़ान त्वता क'र जगतअम्बा'य,
दोरुथ च.य कौशिकी दुर्गा स्वरूप ।
आग्रह सान रु'नि श्रुनि पाद त्रोवुथ,
कलस महिषासुरस वोत पाताल ।
आनन्दमय सुय पाद चोन सुन्दर,
यन्दराज' यथ नम्यव ह्यथ मुखत' माल ।
सुय रुनि श्रुनि पाद म्यति माता ब'न्यतन,
कारण सदा जय जय प्रावनुक ।

सौन्दर्यविभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
सम्पत्तिकल्पतरवस्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्वकुमुद प्रकरावबोध-
पूर्णेन्दवस्त्वयि जगज्जननी ! प्रणामः ।२।

ही त्रुपोर' सुन्दरी ही जगत् अम्बा,
लोल'सान भक्तिभाव' यिम प्रणाम करान ।

[2]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

श्रीचक्र' ज्ञान सूत्य व्यो'न - व्यो'न द्वारव,
सासव'द्य पूजा प्रणाम च़ेय करान।
तिमव'य प्रणामव किन्य तिमन छि वुपदान,
सुन्दरतायि हु'न्द्य रुत्य - रुत्य गुण।
तिम प्रणाम छि तिथ्य यिथ' चक्रवर्त राजन,
कल्पवृक्ष छु सम्पदा पोशनावान।
पुनिम चन्द्रम' यिथ' कुमद पोश फोलवान,
तिथय पा'ठ्य वैखुरी छि भखत्यन वुजान।
"ही जगत अम्बा गोछ़ म्य वरदान युथ,
- ब ति' कर' हा च़ेय यिथ्य - यिथ्य प्रणाम।

देवि ! स्तुतिव्यतिकरे कृतबुद्धयस्ते
वाचस्पतिप्रभृतयोऽपि जडीभवन्ति।
तस्मान्निसर्गजडिमा कतमोऽहमत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुरतापनपत्नि ! कर्तुम्।३।

ब्रहस्पति - पाद, दीवगण बेयि व्यदवान,
चा'न्य - त्वता कर'नस क'ल्य छिय गछ़ान।
मनुष्य स्वभाव किन्य जड छुस ब' आ'सिथ'य,
ग्रन्ज़ं मन्ज़ नय छुस कुनि शुमारस'य।
शंकर वल्लभा ही महारा'नी,
को'त ब' वात' चा'निय त्वता करनस।

[3]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मातस्तथापि भवतीं भवतीवृताप
विच्छित्तये स्तुतिमहार्णवकर्णधारः।
स्तोतुं भवानि ! स भवच्चरणारबिन्द-
भक्तिग्रहः किमपि मां मुखरीकरोति।४।

पन'नि मूर्ख् भाव् किन्य ही जगतमाता,
तोति छुस ब' चा'निय यि त्वता ग्यवान।
यमि संसारक्य संताप युथ हरण,
र'टयमय भखति - भाव किन्य चा'निय चरण।
सुय पाद'पूजा हां'ज़ ब'नि माता,
तारि अज्ञान' सागरस असि अपोर।
चरण' कमलन हु'न्ज़ भखती ब' प्रावहा',
तवय हठ' किन्य मा'ज्य बन्योस वाचाल।

सूते जगन्ति भवती, भवती बिभर्ति,
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती, भवानि !
मोहं भिनत्ति भवती, भवती रूणद्धि
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः।५।

शिव' रूप अवस्थायि प्यठ' पृथवी ताम,
शयत्र'हव त्वत्तब च'य सृष्टि करान।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

त्रनव'न्य जगतन जुव दिवान च'य रछान,
क्षय कर'नुक ति मान्ना च'य संज करान।
अनुग्रह रूप' चय पिदान रूप ति चोनुय,
पंच' क्रत्य रूप' चा'निय यि लीला।
आशचर्यमय चोन व्यवहार त्रुपरा'य,
अथ्य मायायि चानि जय जय कार।

यस्मिन्मनागपि नवाम्बुजपत्रगौरि !
गौरि ! प्रसादमधुरां दृशमादधासि।
तस्मिन्निरन्तरमनंगशरावकीर्ण-
सीमन्तिनीनयनसन्ततय: पतन्ति ।६।

सफेद ताज' फोल्यम'त्य पम्पोश' व'थर जन,
रूप चोन छु माता पारवती।
आनन्दमय दृष्टि यस च' त्रावख,
तस अनुग्रह मा'ज्य युथ' छुय बनान।
कामदीव' तीरव सुन्दर शाखतियि,
सार्यय व्यसरिथ मुदय तस गंडान।
ही गौरी ! सार्यय यन्दर्यय त' वासनायि,
वश गछान त' पोत' फीरिथ छस नमान।

[5]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पृथ्वी भुजोऽप्युदयनप्रवरस्य तस्य
विद्याधरप्रणतिचुम्बितपादपीठः।
यच्चक्रवर्तिपदवीप्रणयः स एष
त्वत्पादपङ्कजरजः कणजः प्रसादः ।७।

ही चक्रीश्वरी पम्पोश' पाद चा'न्य,
तिहं'जि गरदि माता कोताह बजर।
उदयन प्रवर ओस चक्रवर्थ रा'ज यस,
पाद - पीठस ज्ञानवान आ'स्य नमान।
राजस यिति बाजरुक ओस कारण,
चानि पाद' गर्दि हुन्द यूत बोड प्रसाद।
"असि ति गोछ माता युथुय अनुग्रह चोन,
तन' मन' कर'ह'व पाद वन्दना।"

कल्पद्रुमप्रसवकल्पितचित्र पूजा-
मुद्दीपितप्रियतमामदरक्तगीतिम्।
नित्यं भवानि ! भवतीमुपवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैलगुहागृहेषु ।८।

कल्पवृक्ष पोशव स्थूल दोह पूजा,
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध च्य आलवान।

[6]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अमिय आशचर्यमय पूजायि किन्य व'खत्य,
मस ग'छिथ लोल सान छि गीत वखनान।

दीह समीर परबत अन्दरिम्यन गुफन मंज,
करणीश्वरीयि चे.य न्यथ साधान।

ही दीवी तिम साधक विद्याधर,
मन वीणायि प्यठ चा'न्य गुण ग्यवान।

लक्ष्मीवशीकरणकर्मणि कामिनीना-
माऽकर्षणव्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्रः।
नीरन्ध्रमोहतिमिरच्छिदुर प्रदीपो
देवि ! त्वदंघ्रिजनितो जयति प्रसादः।९।

ही दीवी मूक्ष - लक्षमी प्रावनस,
चा'न्य पाद गर'द छम बोड अनुग्रह।

यन्द्रय शक्तिय - कामिनिय सार्यय,
वश करनस छु सुय स्यद मन्तर।

चानि चरण कमल निश उपद्योमुत प्रकाश,
चोंग बनिथ मुह् अन्धकारस चटान।

ही माता युथ प्रज्वलवुन प्रसाद चोन,
जय दिवान, अ'सिनय च.य जय जयकार।

[7]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

देवि ! त्वदङ्घ्रिनखरत्नभुवो मयूखाः
प्रत्यग्रमौक्तिकरुचो मुदमुद्वहन्ति
सेवानतिव्यतिकरे सुरसुन्दरीणां
सीमन्तसीम्नि कुसुमस्तबकयितं यैः ।१०।

चा'न्य मुखत' नम' रच' फ'ल्य यिथ्य चमकान,
ज' च' शरनागतन छि आनन्द दिवान ।
दीव - त्रियि तिमन'य मो'खत नमनय मा'ज्य,
डेयक' - सुम' ह्यथ चे'य कुन न्यथ नमान ।
अभ्यास भखती ब्ययि समावीश किन्य,
ज़ोतवु'न्य पोष गोन्द्य फोलवुन्य लगान ।
तिमय करनेश्वरी ति ईकागर गछ़िथ,
भक्ति, शक्ति, युक्ति सूत्य चे'य छि पूज़ान ।

मूर्घ्नि स्फुरत्तुहिनदीधिति दीप्तिदीप्तं
मध्ये ललाटममरायुधरश्मिचित्रम
हृच्चक्रचुम्बि हुतबुक्कणिकानुरूपं
ज्योतिर्यदेतदिदमम्ब ! तवस्वरूपम् ।११।

शेर चोन दिफतिमान चन्द्रम प्रकाश ह्युह,
शीतल चमकवुन्य चा'न्य ज्यूति ।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

डेकु' प्यठ रंगारंग इन्द्र धनुष हि'शि',
जोतव'नि जा' च' माता - प्रकाश चोनुय।
हृदयि चक्र प्यठ' यिम अन्ग कण छि प्रज्वलान,
जयोतिर्मय मा'ज्य स्वरूप चोनुय।
साधक यछा ज्ञान क्रिया शकियि किन्य,
ऐं क्लीं सौ मंत्र चोनुय जापान।

रूपं तव स्फुरितचन्द्रमरीचिगौर-
मालोकते शिरसि वागदिधंवतं यः।
निःसीमसूक्तिरचनामृतनिर्भरस्य
तस्य प्रसादमधुराः प्रसरन्ति वाचः।१२।

सफेद शीतल फोलमुत चन्द्र'म ह्युह,
शेर प्यठ धारि युस वाकबीज रूप।
अहं परामर्शुक वार' व्यस्तार क'रि,
ध्यान धरि बे'यि क'रि साक्षातकार।
परिपूरण अमृत वा'णी तस,
भखतिस बुजि चानि अनुग्रह सूत्य।

सिन्दूर पांसुपटलच्छुरितामिव द्यां
त्वत्तेजसा जतुरसस्नपितामिवोर्वीम।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे! विहाय
व्रीडा मृडानि! सुदृशस्तमनुद्रवन्ति।१३।

[9]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ही त्रपोरसुन्दरी मृडानी रूपा,
चोन ध्यान युस धरि क्षनमात्रस ।

आकाश स्यन्दरि रंग पृथवी लाछि रंग,
तीज' सुत्य आम'त्य अलन' व'लन जन ।

साक्षात्कार यलि क'रि अमि स्वरूपुक,
इन्द्रय मन्दछिरोस पत लारनस ।

"गांगल छस गलान द्वैत्' भाव तस चलान,
आनन्द स्वरूपस सुय लय गछान ।"

मातर्मुहूर्तमपि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारसप्रसरतन्तुनिभं भवत्याः ।
ध्यायन्त्यनन्यमनसस्तमङ्गतप्ता:
प्रद्युम्नसोम्नि सुभगत्वगुणं तरूण्यः ।१४।

ही माता चोन ध्यान युस भखत्य करि,
क्षन मात्रस घ'रि अभ्यास सुत्य ।

का'र' म'च लाछि रंग' अ'विज तार जान,
सुशमुनाय किन्य प्रजाला'विथ ब्रमाण्ड ।

कामपीडायि व'जिमच यन्दर्य व'च,
पो'तफीरिथ तस' थलि - थलि वछान ।

[10]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सुन्दर शक्तियि गांग'ल त्रा'विथ,
कामदीव जा'निथ त'स्य छि पूज्यान।
अमिय ध्यान' तस छु' नं कामदीव पोरान,
उद्धवं - कुण्डलिनी किन्य प्रकाशमय बनान।

योयं चकस्ति गगनार्णवरत्नमिन्दु-
र्योऽयं सुरासुरगुरुः पुरुषः पुराणः।
यद्वाममर्धमिदमन्धकसूदनस्य
देवि ! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति।१५।

आकाश मण्डलुक रतन चन्द्रम युस,
चमकान च'निय क्रया - शक्ति।
दिवता त' असरन हुन्द गुरु' - पुरुष युस,
नारायण - च'नि, ज्ञान - शक्ति।
अन्धकार कासान अर्धना'रीश्वर,
महादीव ति च'निय इच्छा - शक्ति।
ही दीवी यिम त्रनव'य शक्तिय,
सेद्ध पुरुषव जा'न्य च'निय स्वरूप।

इच्छानुरूपमनुरूपगुणप्रकर्षं
सङ्कर्षणि ! त्वमभिमृष्य यदा बिभर्ति।
जायेत स त्रिभुवनैकगुरूस्तदानीं
देवः शिवोऽपि भुवनत्रयसूत्रधारः।१६।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पन'निय यछायि किञ शिव वुलसावान,
सुय रूप चोन गव संकर्षनी।
यलि च'य स्पर्श किन्य शिव रूप धारान,
शिव छु त्यलि त्रे'न भवनन पालान।
योहोय दीव जगत'चि क्रीडायि लो'गमुत,
सूत्रधार - सत्विमर्श रूप धारान।

रुद्राणि ! विद्रुममयीं प्रतिमामिव त्वां
ये चिन्तयन्त्यरुणकान्तिमनन्यरूपाम्।
तानेत्य पक्ष्मलदृश: प्रसभं भजन्ते
कण्ठावसक्तमृदुबाहुलतास्तरुण्य: ।१७।

सृष्टी - संहार - शक्ति रूपा,
च'य वनान शंकर रुद्रानि।
ही रुद्रानी युस साधक धरि,
ध्यान चोन व'ज़लि रंग सिर्यि - उदयुक।
लोदर' रंग प्रतिमा अलौकिक रूप धरि,
एँ रूप मन स'य मंज़ शूबिदार।
त'स्य साधकस मा'ज्य सुन्दर कोमल,
सिद्ध शक्तियि नालम'त्य छिय रटान।
"अद' माता क्याह तस पर' रोज़ान,
यन्द्रय शक्तियि मीठ्य छस दिवान।"

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

त्वद्रूपमुल्लसितदाडिमपुष्परक्तं-
मुदभावयेन्मदनदैवतमक्षरं यः।
तं रूपहीनमपि मन्मथनिर्विशेष-
मालोकयन्त्यरूनितम्बभरास्तरुण्यः।१८।

कामराज क्लीम बीज़ अक्षर तीज़' सो'स,
ध्यान क'रि चोन - घ'न पोश रंग ह्यु ह।
बुथि किन्य यो'द आसि सुन्दरतायि रो'स,
अन्दरिमि शकलि ज़ान पान कामदीव।
ज्ञान - क्रियायि सुत्य व'सि आमत्य यिम,
कामदीव' शक्तियि त'स्य छय वरान।
सुय भाग्यवान मा'ज्य मध्य नाडी किन्य,
न्यथ विकासु' समा'धियि मंज छु रोज़ान।

ध्यातासि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमलद्युतिरकल्मषमानसेन।
तस्याऽविलम्बमनवद्यमनल्य कल्प-
मल्पैर्दिनैः सृजासि सुन्दरि ! वाग्विलासम्।१९।

ही हिमाल पुत्री निर्मल रूपा,
चन्द्रम प्रकाश चोन गौरी स्वरूप।

[13]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भक्तिभाव' पज़ि मन यलि कांह मनि र'टि,
युथ निर्मल स्वरूप ध्यानस मंज़ा।
ईकागर येलि रोज़ि मंज़ा ध्यानस,
चानि अनुग्रह प्रावि युथ वरदान।
सौ मंत्र रूप किन्य तत्काल तस वुज़ि,
सुन्दर वा'णी त' शु'द वैखुरी।

आधारमारूतनिरोधवशेन येषां
सिन्दूररंजितसरोजगुणानुकारि।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि ! वपुस्त्वदीयं
ध्यायन्ति तानिह सभीहितसिद्धसाध्याः।२०।

ही प्रकाश रूपा कुण्डलिनी माता,
हृदयस मंज़ा यिमन व'नि चोन ध्यान।
मूलादारुक वायू वष क'रिथ,
तिमन भखत्यन खसि वुज़म्मि तार।
सेन्दरि रंग फोलमुत पम्पोश रूप चोन,
हृदयस मंज़ा रटन द्यन क्योह रात।
साधक पुरुष बेयि सिद्ध गण सा'रिय,
तिमन यष्टदीव' मा'निथ छि पूज़ान।

[14]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

त्वामैन्दवीमिव कलामनुभालदेश-
भुद्भासिताम्बरतलामवलोकयन्तः ।
सद्यो भवानि ! सुधियः कवयो भवन्ति
त्वं भावनाहितधियां कुल कामधेनुः ।२१।

ही भवानी छख च शिव सन्ज्ञ शक्ति,
बखत्यन किच सुरभि कामदीन ।

तिछ' कामदीन युथ सार्यय कामनायि,
त्रप्त सपदान ध्यान यलि युथ बनान ।

डयकस प्यठ अमाकला चित्तरूप सुमराण,
त्रिवेनी चक्रस प्यठ च' ज्योतान ।

अमिय चिन्तन सूत्य छि बुद्धिमान माता,
सर्वज्ञ बनान ब्ययि सिद्धकाम बनान ।

त्वां व्यापिनीति समना इति कुण्डलीति
त्वां कामिनीति कमलेतिकलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललितत्य पराजितेति
देवि ! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति ।२२।

प्रणव ओंकार क्यन बाहन मात्रायन,
मज्ं, जगतन हुन्द चोन व्यस्तार ।

[15]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

साधारण जगतस मंज माता छुय,
अ ऊ म मात्रायि चोनुय रूप।
विजया जया उमा शक्ति नाव किन्य,
पूजा च़ेय छिय सतजन करान।
बिन्दु अर्धचन्द्र बेयि निरोधिका छय,
मात्राय मंज जगत'चि शक्तियि।
मालिनी, ललिता अपराजिता छिय,
ललाट प्यठ माता चा'निय रूप।
अर्थ जगतस मंज मात्रायि त्रनवय,
नाद नादान्त बेयि शक्ति च़य।
कामिनो कमला कलावती नाव' किन्य,
भक्तजन चा'निय तोता छिय करान।
स्वरूप जगतस मंज द'हिम व्यापिनी च़'य।
कहिम समना ब'हिम ऊर्ध्व कुण्डलिनी।
यिमय बाह शक्तियि शरीर क्यन स्थानन,
ओंकार' रूप जा'निथ, च़ेय पूजान।

ये चिन्तयन्त्यरूणमण्डलमध्यवर्ति
रूपं तवाम्ब ! नवयावकपंकपिंगम।
तेषां सदैव कुसुमायुधबाणभिन्न-
वक्षःस्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति।२३।

[16]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सीर्य मंडलस मंज प्रज्वलुन स्वरूप चोन,
न'वि लाछि रंग' जन पा'रनोवमुत ।

ही जगत अम्बा यिम साधक चा'न्य,
चिन्तन छिय करान अमि स्वरूपुक ।

कामदीवन यिमन वासनायि तीरव,
आसन हृदय करिम'ति छोकलद ।

मृगनयनिय हिशि वासनायि सार्यय,
तिमन साधकन सदा रोज्ञान वष ।

सार्यय यन्द्रय - शक्तियि तिमन'य,
चानिस'य तीज्ञ'रूपस गछ्यान लय ।

सुषुमनायि किन्य यस कुण्डलिनी जाग्रत,
गछि तस दशा छय यह'य मा'ज्य बनान ।

उतप्तहेमरूचिरे ! त्रिपुरे । पुनीहि
चेतश्चिरन्तनमघौघवनं लुनीहि ।
कारागृहे निगडबन्धनपीडितस्य
त्वत्संस्मृतौ झटिति मे निगडास्त्रुटन्तु ।२४।

नारद्राव सोन'सुय मल दज़ि गाह त्रावि,
तिछ दिफती चा'न्य त्रिपोर सुन्दरी ।

[17]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कर अनुग्रह कास म्यति त्रनवय मल,
ब'ति निर्मल बन' कर' च़ेय त्वता।

जन्म जन्मांतरक्य वासनायि हुन्द जंगल,
यिम म्य यथ मनस खत्रिम'ति च़ठतम।

मोह संसार किस जेलखानस मंज़,
विशियन हन्ज़ा हथक'रि दुःख दिवान।

छम में आशा बस अकि प'ज़ि ध्यान् मा'ज्य,
यिम' हा'न्कल अकि अकि व'स्य प्यवान।

ही तीज़ोमई त्रिपुरा भगवती,
कर्म खुर्यकीय मे दर्य गंड मच़राव।

शर्वाणि ! सर्वजनवन्दित पादपद्मे !
पद्मच्छदच्छविविडम्बित नेत्रलक्ष्मि
निष्पापमूर्तिजनमानसराजहंसि !
हंसि त्वमापदमनेकविधां जनस्य ।२५।

संहार कारिणी शिव स'न्ज़ा च़' शक्ति,
शर्वानी रूप भीद भाव च़टान।

जे'न मरनु' पीडायि सोस्य अस्य सा'रिय,
च़रण कमलन छिय वन्दना करान।

[18]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पम्पोश वथरन हिह न्यथर चा'निय,
अन्ताकरण भखत्यन सगवान।
निर्मल मन रूप' डल'नय मंज़ छख,
राज़ हंसी ज़ान त' छ'ट मारान।
शर्नागतन टाठ्य'न भखत्यन मा'ज्य,
प्रथ तरफ आपदायि छख गालान।

त्वत्पादपंकजरज: प्रणिपातपूतै:
पुण्यैरनल्पमतिभि: कृतिभि: कवीन्द्रै।
क्षीरक्षपाकरदुकूलहिमावदाता
कैरप्यवापि भुवनत्रितयेऽपि कीर्ति: ।२६।

चानि पाद गर्दि येम्य क'रि प्रणाम पज़ि मन,
तस रोज़ान अन्ताकरण शोद्ध।
कर्मवान क्रियावान, बुधिमान तिम केन्ह,
चा'नि अनुग्रह किन्य शूभव'न्य बनान।
न्यथ धारनायि मंज़ चानिय गुण ग्यवान,
त्रन भवनन मंज़ नामवर बनान।
द्वोध', चन्द्रम' रीशिम वे यि शीन ज़न,
निर्मल निशकाम यश प्रावान।
"माज्य दिखना वरदान मे ति युथ ब' ति,
कर' ह्वा' पादन तिथ्य तिथ्य प्रणाम।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

त्वद्रूपैकनिरूपणप्रणयिताबन्धो
दृशोस्तवदगुण-
ग्रामाकर्णनरागिता श्रवणयोस्त्वत्सं-
मृतिश्चेतसि ।
त्वत्पादार्चनचातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं
वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासनव्यसनिता मे देवि !
मा शाम्यतु ।२७।

ही प्रकाशमय दीवी त्रिपुर - सुन्दरी,
छम मे कुत्र त' कीवल यह'य कामना।

प्रेम भाव गोछ सदा न्यतरन भासुन,
चानिय स्वरूपुक साक्षात्कार।

कन रूजित'न न्यथ गुण च'न्य बोज़ान,
मन करिहे चा'निय सुमरण।

अथ मेन्य आ'सितन त्रुक्य सदा माता,
चा'न्य पाद' - पूजा करनस प्यठ।

मो'खस प्यठ आ'सितनम गुण कीर्तन चा'न्य,
प्रथ विज़ि प्रथ जायि गांगलि रोस।

[20]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ह्यी वरदायनी छुम मे' अभिलाश यिय',
ग'छ न यिछ अवस्था मे कम जांह गा'छन्य।

उद्दामकाम परमार्थ सरोजषण्ड-
चण्डद्युतिद्युतिमुपासित षट्प्रकाराम्।
मोह द्विपेन्द्रकदनोद्यतबोधसिंह-
लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि।२८।

सिर्य प्रकाश सो'स सु' वुज़ामल' शक्ती,
येमि सूत्य शनव'य चखर' छि फेरान।

पांछ यन्दर्यय व्ययि मन ह्यथ शनव'य,
ईकाग्र ध्यान' सुत्य छि पूज़ान।

मुह रूप' अज्ञान हस्य'तिस मारनस,
ज्ञान रूप' सुह अख क्रीडा करान।

दिह' प्राण इन्दर्यय सा'रिय सोम्बरिथ,
शेयि प्रका'र्य अन्दरीय लीला करान।

ज्योतीमय कुण्डलिनी योस् त्रुपुरा,
त'स्य जगत मातायि प्रणाम छुस करान।

[21]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गणेशवटुकस्तुता रतिसहायकामान्विता
स्मरारिवरविष्टरा कुसुमबाणबाणैर्युता ।
अनंगकुसुमादिभिः परिवृता च
सिद्धैस्त्रिभिः
कदम्बवनमध्यगा त्रिपुरसुन्दरी
पातु नः ।२९।

प्राण अपान गनीश जीवतिच खस'वस,
निरन्तर चानिय त्वत्ता छिय करान ।
कामदीव मन, रति बोद्ध - ज्ञान माता,
इच्छा क्रिया रूप छुय चोनुय स्वरूप ।
पराशक्ति रूप' सदाशिव चे आसन,
त्रेनवय सेद्ध चे य मंज लय गछान ।
चंचल वृचे कामदीव सन्द्य' पांछ तीर,
इच्छा शक्ति रूप' चे य धारिमा'ति ।
चित्त आनन्द इच्छा ज्ञान बेयि क्रियायि सोस,
कामदीव' सन्दि पोश ति चे य पा'रिम'ति ।
मायायि वोलमुत चे जगतुक आंगुन,
रछ चरणन तल कर अनुग्रह ।

[22]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ब्रह्मेन्द्ररुद्रहरिचन्द्रसहस्त्ररश्मि-
स्कन्दद्विपाननहुताशनवन्दितायै।
वागीश्वरि ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमाता-
रन्तर्बहिश्च कृतसंस्थितये नमस्ते।३०।

ब्रह्मा - चन्द्र - रूद्र त्रनवय सदा च़्य,
ऐं रूप वागीश्वरी चे पूजान।
सिर्य, चन्द्रम, विष्णु त्रभवनेश्वरी,
कामराज क्लीम मंत्र पूजान छिय।
ह्री विश्वमाता कुमार गनेश त अग्नी,
वाडव रूप' चा'निय उपासना करान।
परा अपरा रूप किन्य ह्री माता,
अन्दर' नेबर' खसि व'सि प्यठ च़' ठहरिथ।
तस आधि शक्तियि त्रुभवन' स्वामिनिय,
श्री चक्र रूप' छुस ब' पादन नमान।

यस्तोत्रमेतदनुवासरमीश्वरायाः
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा श्रृणोति।
तस्येप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ
जायेत स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम्।३१।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

युस दोयुम यि चचंस्तव जगत्अम्बा'य,
दोहय - दोहय परि या बोजि ध्यान सान।

तस मनोरथ प्रथ कांह पूर' सपदान,
बे यि भोग त' मोक्ष सिद्धी छु प्रावान।

राजा' छिस पूज्ञान हरण न्यथरव यिम्,
यन्दर्यय शक्तियि वश तस गछान।

पत छु न' व्यस्रान आनन्द छु भूगान,
पत पोत कल छस न कांह रोजान।

कर जगतअम्बा अनुग्रह युथ असि,
विजि - विजि कर'हव चा'नी त्वता।

शुभ समाप्त्

[24]

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुरु आराधना

प्रो० ओंकार नाथ चूंगू

गु'र' दीव रोज़तम सहायतस,
मन म्योन अन्तन कोबहस ।
रज़ा' कर अमिस वो'ट् वान्दरस,
मन म्योन अन्तन कोबहस ।
युथ रोज़ि ख्यल ज़न मंज़ डलस,
मन म्योन अन्तन कोबहस ।
क्रालन गर्योनस रचि' म्यचे,
ग्रट कर्मने रोटनस कचे ।
शोंगरफ म्य रंग खार मंज़ मनस ॥ मन म्योन....
आसन छु कीमियागर गु'र'य,
पात्र ति गछि नेरुन शशिय् ।
युथ वरि सु पानय पान' तस ॥ मन म्योन....
गुर' सं'ज कृपा यस रछ बने,
अ'ड्युक न नेरि मंज़ मनकले ।
रंग' रग' म्य करतम रंग' रोस ॥ मन म्योन....
मत त्रावतम वो'न्य अडवते,
युथ न' फेर' यति व्ययि वति वते ।
टिकिलिस गण्डुम पन'निस बरस ॥ मन म्योन....

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com